

---

Shri MenaKANandinistotram

श्रीमेनकानन्दिनीस्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : menaKAnandinIstotram

File name : menaKAnandinIstotram.itx

Category : devii, pArvatI, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Madhura Bal madhurabal11 gmail.com

Proofread by : Madhura Bal madhurabal11 gmail.com

Latest update : August 19, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीमेनकानन्दिनीस्तोत्रम्



गीर्वाणाखिलसम्पदम्बुजवनप्रोन्मूलनाकौतुकि-  
प्रौढोन्मत्तकरीन्द्रसैरिभवधक्रीडाप्रसन्नानना ।  
देवैराप्तमनोरथैरतिगतक्लेशैर्मुहुर्वन्दिता  
विश्वत्राणपरायणा विजयते श्रीमेनकानन्दिनी ॥ १ ॥

निःशेषामरवाहिनीकरिघटाशार्दूलविक्रीडित-  
प्रौढाहङ्कृतिचण्डमुण्डहननेनाह्लादयन्ती सुरान् ।  
भक्ताभीष्टविधानकल्पलतिका कारुण्यवारात्रिधिः  
श्रीश्रीकण्ठगृहप्रभा विजयते श्रीमेनकानन्दिनी ॥ २ ॥

लीलोन्मूलितदानवारिनिकराखण्डप्रतापोन्मदो-  
द्गर्जच्छुम्भनिशुम्भदैत्यमृगायाहर्षस्मितास्याम्बुजा ।  
इन्द्रोपेन्द्रसमर्चिताङ्घ्रिकमला वन्दारुचिन्तामणिः  
श्रीमच्छम्भुकुटुम्बिनी विजयते श्रीमेनकानन्दिनी ॥ ३ ॥

या शक्तिर्मधुकैटभादिहनने विष्णुं चकारास्पदं  
गीर्वाणाधिपतिं निलिम्पबलभिद्वृत्रादिकोन्मूलने ।  
देवद्रावणविश्रुतासुरवधे दैत्यारिसेनापतिं  
सा बाधौघविनाशिनी विजयते श्रीमेनकानन्दिनी ॥ ४ ॥

श्रद्धा तर्कवतां क्षमा बलवतां सम्पद्वतां नम्रता  
शान्तिः सन्त्यजतां धृतिः प्रयततां भक्तिर्भवे जानताम् ।  
याऽऽपन्नार्तिहरा हराभिलषिता तापत्रयोन्मूलिनी  
सा सौभाग्यविधायिनी विजयते श्रीमेनकानन्दिनी ॥ ५ ॥

यामाहुर्निगमाः सदादिवचनैः सृष्टेः पुरा केवलां  
या चेतोतिगतप्रपञ्चरचनामन्यानपेक्षा व्यधात् ।  
अन्ते स्वात्मनि सन्निवेश्य निखिलं तिष्ठत्यखिन्नप्रभा  
सा प्रत्यकितिरच्युता विजयते श्रीमेनकानन्दिनी ॥ ६ ॥

शैलेन्द्रजास्तवमिमं व्यदधात्प्रबोधा-

नन्दो गिरीन्द्रतनयाकरुणैकपात्रः ।

आनन्दसन्ततिमयं तनुतान्नराणां


गौरीपदाम्बुजमधुव्रतमानसानाम् ॥ ७ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामिप्रकाशानन्दपुरीविरचितं


श्रीमेनकानन्दिनीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

Proofread by Madhura Bal madhurabal11 gmail.com

---

——  
*Shri MenaKANandinistotram*

pdf was typeset on January 22, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

